अरविंद कि लिए तो ईडी सूर्पणखा साबित हुई...

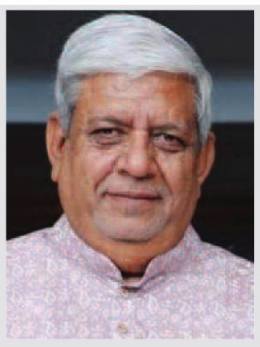

राकेश अचल

अब आम आदमी पार्टी कि लिए रास्ता खुला है की वो अपने संस्थापक की गिरफ्तारी कि खिलाफ जेलें भरे या चुनाव लड़े । विपक्षी इंडिया गठबंधन की जिम्मेदारी है कि वो केजरीवाल की गिरफ्तारी कि खिलाफ कानूनी लड़ाई लड़े या सड़कों पर लड़े या फिर वोट की ताकत से इस कथित अवैध-वैध कार्रवाई का प्रतिकार करे। विपक्ष कि लिए अभी तमाम विकल्प खुले हैं ,तय विपक्ष को ही तय करना है कि कांटे से काँटा निकाला जाये या कोई दूसरा रास्ता निकाला जाये ?

सब कहते थे कि हमारी संवैधानिक संस्थाओं के पास न दांत हैं और न नाखून लेकिन ईडी यानि प्रवर्तन निदेशालय ने इस धारणा को गलत साबित कर दिया ,21 मार्च की रात दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद ये साबित हो गया है कि ईडी कोई स्वप्न सुंदरी नहीं बल्कि वो संस्था है जिसके पास छुपे हुए नाखून और न दिखने वाले पैने दांत भी हैं। यानि ईडी किसी सूर्पणखा से कम नहीं है। ईडी के इतिहास का ये बसे बड़ा कारनामा है कि उसने एक कथित घोटाले में एक निर्वाचित मुख्यमंत्री को गिरफ्तार किया है।

देश में भ्ष्टार्चार के खिलाफ मुहिम कहिये या अदावत की राजनीति कहिये ,जो हो रहा है है वो अविश्वसनीय है । हमारे वरिष्ठ कवि नरेश सक्सेना कहते हैं कि -चीजों के गिरने के नियम होते हैं! मनुष्यों के गिरने के कोई नियम नहीं होते। लेकिन चीजें कुछ भी तय नहीं कर सकतीं

अपने गिरने के बारे में। मनुष्य कर सकते हैं,बचपन से ऐसी नसीहतें मिलती रहीं कि गिरना हो तो घर में गिरो ,बाहर मत गिरो ,यानी चिट्ठी में गिरो, लिफाफे में बचे रहो, यानी आँखों में गिरो ,चश्मे में बचे रहो, यानी ,शब्दों में बचे रहो। इस कविता को मै हमेशा याद रखता हूँ और सोचता हूँ कि राजनीति में भी गिरने कि नियम होना चाहिए थे ,जो दुर्भाग्य से नहीं हैं।

अरविंद केजरीवाल दरअसल केंद्रीय सत्ता की आँख कि बाल थे, नाक के बाल होते तो शायद बच भी जाते गिरफ्तारी से। केंद्रीय सत्ता एक ऐसा छाता है जिसके नीचे खड़े होकर हर आपदा से बचा जा सकता है। अजित पंवार हों या अशोक चौहान ,सुरेश पचौरी हों या ज्योतिरादित्य सिंधिया सबके सब आखिर बच गए न ! अन्यथा आप जिसे चाहो भ्ष्टार्चार कि आरोप में ईडी कि जरिये उठवा लीजिये,जेल में डाल दीजिये और वर्षों तक बिना मुकदमा चलाये अपनी कैद में रखिये। मनीष सिसोदिया,और संजय सिंह की तरह। उन्हें दोषी या निर्दोष साबित करने की जरूरत नही। वे दोषी होने कि बाद जितनी सजा के हकदार होंगे उतनी कैद उन्हें एक विचारधीन कैदी कि रूप में जेल में रखकर हिसाब बराबर किया जा सकता है।

अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी कि लिए मै निजी तौर पर ईडी को शाबासी देना चाहता हूँ। कम से कम ईडी ने ये तो

साबित किया कि वो एक कुशल कठपुतली है और नचाने वाले कि हर इशारे को बाखूबी समझती है। अरविंद की गिरफ्तारी में ईडी का कोई दोष नहीं है । सारा दोष अरविंद केजरीवाल की किस्मत का है। उनकी और उनकी पार्टी की किस्मत खराब है इसलिए उन्हें ये दिन देखना पड़ रहे हैं। आगे इससे भी ज्यादा बुरे दिन देखना पड़ सकते हैं। मुमकिन है कि आने वाले दिनों में जेल में उनकी संगत कि लिए पंजाब कि मुख्यमंत्री श्रीमान भगवंत मान भी गिरफ्तार कर लिए जाएँ। इस देश में कुछ भी सम्भव है। ईडी ने 68 साल में पहली बार कोई पुरुषार्थ दिखाया है।

शराब घोटाले में अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के लिए कोई अगर माननीय कामचलाऊ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को दोषी मानता है तो मै सोचता हूँ के ये उसका पूर्वाग्रह है । मोदी जी यदि इस गिरफ्तारी कि पीछे होते तो क्या अभी तक अरविंद केजरीवाल उनके सामने अपनी आँखें लाल कर खड़े हो सकते थे। मोदी जी ने तो अरविंद केजरीवाल को बाल-बाल बचाने की कोशिश की ,लेकिन वे खुद ही नहीं बचना चाहते थे तो बेचारे मोदी जी क्या करते ? मोदी जी जैसा उदार प्रधानमंत्री अरविंद केजरीवाल को कम से कम इस जन्म में तो नहीं मिल सकता। केजरीवाल को मोदी जी का कृतज्ञ होना चाहिए।

हमारी केंद्रीय सत्ता की उदारता और दरियादिली का सबसे बड़ा सबूत ये है कि उसने या उसकी कठपुतली ईडी ने अभी तक कांग्रेस कि राहुल गांधी को गिरफ्तार नहीं किया। राहुल गांधी से सिर्फ लम्बी पूछताछ की गयी । वरना किसी की गिरफ्तारी में आखिर कितना वक्त लगता है ? मोदी जी की न सही लेकिन ईडी की दरियादिली है कि उसने कांग्रेस कि सिर्फ खाते फ्रीज किये ,ईडी चाहती तो कुछ भी फ्रीज कर सकती थी। केंचुआ ने आखिर राहुल गांधी को एडवांस में एडवाइजरी दी ही थी न ?यानि अभी भी मोदी जी ,उनकी ईडी,सीबीआई और केंचुआ राहुल गांधी पर मेहरबान है । कांग्रेस को भी मोदी जी की कदर करना चाहिए।

झारखण्ड में हेमंत सोरेन और दिल्ली में अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी से भाजपा का मिशन 400 पार आसान हो सकता ह। होना भी चाहिए ,क्योंकि भाजपा कि पास जनता की सहानुभूति बटोरने कि लिए फिलहाल कोई दूसरा उपाय है भी नहीं। चुनाव या तो सहानुभूति से जीते जाते हैं या फिर जोड़तोड़ से। जब सहानुभूति न हो तो जोड़तोड़ ही इकलौता विकल्प बचता है । आपको आजादी है कि आप चाहें तो केजरीवाल की गिरफ्तारी को जोड़तोड़ से जोड़कर देख सकते हैं। राजनीति में जैसे गिरने का कोई नियम नहीं है वैसे ही जोड़तोड़ का भी कोई नियम नहीं है। मुमकिन है की भविअश्य में इस जोड़तोड़ कि लिए भी कोई नियम,कोई धारा बना ली जाये।

देश में जब लोकसभा चुनाव की प्रक्रिया शुरू हो गयी है ऐसे में कोई भी गिरफ्तारी भी आदर्श नहीं कही जा सकती। केंचुआ को चाहिए कि वो अपनी आदर्श आचार संहिता में इस बात को भी जोड़े कि संहिता लागू होने कि बाद किसी भी राजनितिक दल कि किसी भी छोटे-बड़े नेता को किसी पुराने मामले में गिरफ्तार नहीं किया जायेगा । चुनावों के चलते किसी भी नेता या कार्यकर्ता की गिरफ्तारी संविधान की धरा कहें या अनुच्छेद 21 के खिलाफ है। नागरिकों को चुनाव लड़ने ,लड़ने ,प्रचार करने की आजादी तो मिलना ही चाहिए। अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी में कुछ भी नया नहीं है सिवाय समय कि ईडी ने गरफ्तारी कि लिए वो समय चुना है उससे ये बू आती है कि इस गिरफ्तारी कि पीछे साजिश है।

अब आम आदमी पार्टी कि लिए रास्ता खुला है की वो अपने संस्थापक की गिरफ्तारी कि खिलाफ जेलें भरे या चुनाव लड़े । विपक्षी इंडिया गठबंधन की जिम्मेदारी है कि वो केजरीवाल की गिरफ्तारी कि खिलाफ कानूनी लड़ाई लड़े या सड़कों पर लड़े या फिर वोट की ताकत से इस कथित अवैध-वैध कार्रवाई का प्रतिकार करे। विपक्ष कि लिए अभी तमाम विकल्प खुले हैं ,तय विपक्ष को ही तय करना है कि कांटे से काँटा निकाला जाये या कोई दूसरा रास्ता निकाला जाये ?

संपादकीय

सरकार का जवाब मंजूर

`सर्वोच्च न्यायालय में सरकार का यह जवाब देश के बड़े वर्ग को मुंहफट लगा होगा कि 'निर्वाचन आयोग या किसी अन्य संस्था की चयन समिति में किसी न्यायाधीश रहने भर से चुनाव आयोग की स्वतंत्रता और निष्पक्षता सुनिश्चित नहीं हो जाती। यह बड़ा भ्रम है।' यह भाषा इतनी कड़वी है कि लोग इसमें चुनाव बांड जैसे कुछ मसलों पर 'सर्वोच्च न्यायिक सक्रियता' में सरकार की नाराजी भी पढ़ सकते हैं। सरकार का यह जवाब उस मामले में था, जिसमें चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति पैनल से देश के मुख्य न्यायाधीश को आउट कर दिया गया था। पिछले साल से लागू इस नई व्यवस्था में प्रधानमंत्री, विपक्ष के नेता या किसी बड़ी विपक्षी पार्टी के नेता और किसी केंद्रीय मंत्री को रखा गया था। विपक्ष एवं याचिकाकर्ताओं का तर्क था कि समिति में संख्या बल सरकार के पक्ष में है। सीजेआई की मौजूदगी से इसमें एक काम्य संतुलन बना रहता। इसके अभाव में, आयोग की स्वतंत्रता और निष्पक्षता पर विपरीत असर पड़ेगा। विरोधी अपनी आशंका को सही साबित करने के लिए केंद्रीय निगरानी आयुक्त के पद पर प्रधानमंत्री के चहेते को बैठाने और इसका खमियाजा देश को भुगतने का नजीर देते हैं। और कौन नहीं जानता कि चुनाव आयोग में अपना आदमी बैठा हो तो वह क्या नहीं मैनेज कर सकता है। वह चुनाव-तिथियों का निर्धारण सरकार की सुविधा से कर सकता है, चुनाव के चरण बढ़ा सकता है, जिसमें ज्यादा फायदा सत्ता पक्ष को होता है और अनियमितताओं की शिकायतों पर अपनी आंखें मूंद सकता है। इसलिए आयोग में नियुक्तियों पर विपक्ष भी चौकन्ना रहता है। हालांकि नरेन्द्र मोदी सरकार के पहले भी आयोग को अपनी तरह से साधने में कोताही नहीं की गई है। राजीव गांधी, वीपी सिंह और नरसिंहराव सरकारों तक अपनाई गई 'प्रयोगधर्मिता' में मनपसंद का एलीमेंट भी था। एकल चुनाव आयुक्त टीएन शेषन की निष्पक्षता को नियंत्रित करने के लिए ही तीन सदस्यीय आयोग बना था। तब भी शेषन का साथ न देकर शीर्ष कोर्ट ने सरकार के अधिकार का सम्मान किया था। इस बार भी न्यायालय ने दखल देने से इनकार कर यही किया है। दूसरे, पैनल में सीजेआई इस बारे में किसी कानून के बनने तक ही शामिल थे। अतः इसमें न्यायिक अवमानना या किसी पद का अपमान नहीं है। पर संस्था की निष्पक्षता और आजादी अक्षुण्ण ही रहनी चाहिए।

चिंतन-मनन

भगवान की विचारणाएं

जब मनुष्य इस जिम्मेदारी को समझ ले कि मैं क्यों पैदा हुआ हूं और पैदा हुआ हूं तो मुझे क्या करना चाहिए? भगवान द्वारा सोचना, विचारना, बोलना, भावनाएं आदि अमानतें मनुष्य को इसलिए नहीं दी गई हैं कि उनके द्वारा वह सुख-सुविधाएं या विलासिता के साधन जुटा अपना अहंकार पूरा करे बल्कि इसलिए दी गयी हैं ताकि इनके माध्यम से वह विश्व को अधिक सुन्दर और सुव्यवस्थित बनाने के लिए प्रयत्न कर। बैंक के खजांची के पास धन इसलिए रखा रहता है ताकि सरकारी प्रयोजनों के लिए इस पैसे को खर्च कर। खजाने में रखे लाखों रुपये खजांची कैसे खर्च कर सकता है। अपने लिए उसे उतना ही इस्तेमाल करने का हक है, जितना उसे वेतन मिलता है। पुलिस और फौज का कमांडर है, उसको अपना वेतन लेकर जितनी सुविधाएं मिली हैं, उसी से काम चलाना चाहिए। बाकी बहुत सारी सामर्थ्य और शक्ति उसे बंदूक चलाने के लिए मिली है, उसे सिर्फ उसी काम में खर्च करना चाहिए, जिसके लिए सरकार ने उसको सौंपा है। हमारी सरकार भगवान है और मनुष्य के पास जो कुछ विभूतियां, अक्ल और विशेषताएं हैं, वे व्यक्तिगत ऐय्याशी सुविधा और शौक-मौज के लिए नहीं हैं। व्यक्तिगत अहंकार की तृप्ति के लिए नहीं है। भगवान का बस एक ही उद्देश्य है- निरूस्वार्थ प्रेम। इसके आधार पर भगवान ने मनुष्य को इतना ज्यादा प्यार किया। मनुष्य को उस तरह का मस्तिष्क दिया है, जितना कीमती कम्प्यूटर दुनिया में आज तक नहीं बना। मनुष्य की आंखें, कान, नाक, वाणी एक से एक चीजें हैं, जिनकी रुपयों में कीमत नहीं आंकी जाती है। मनुष्य के सोचने का तरीका इतना बेहतरीन है, जिसके ऊपर सारी दुनिया की दौलत न्योछावर की जा सकती है। ऐसा कीमती मनुष्य और ऐसा समर्थ मनुष्य जिस भगवान ने बनाया है, उसकी यह आकांक्षा जरूर रही है कि दुनिया को समुन्नत और सुखी बनाने में यह प्राणी मेरे सहायक के रूप में काम करेगा और मेरी सृष्टि को समुन्नत रखेगा। मानव जीवन की विशेषताओं और भगवान द्वारा विशेष विभूतियां मनुष्य को देने का एक और उद्देश्य है। जब मनुष्य इस जिम्मेदारी को समझ ले कि मैं क्यों पैदा हुआ हूं और पैदा हुआ हूं तो मुझे क्या करना चाहिए तो समझना चाहिए कि इस आदमी का नाम मनुष्य है, इसके भीतर मनुष्यता का उदय हुआ और इसके अंदर भगवान की विचारणाएं उदित हो गयीं।

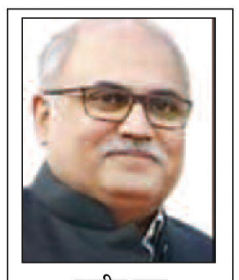

रजनीश कपूर

विदेश में पढ़ाईः सावधानी है जरूरी

हमारे देश से उच्च शिक्षा पाने के लिए विदेश जाना कोई नई बात नहीं है। विदेश से पढ़ाई करने वाले भारतीयों की संख्या काफी है, परंतु जैसे-जैसे समय बदला नए-नए शैक्षणिक संस्थान व विश्वविद्यालय दुनिया के कई देशों में भी खुलते गए। इधर भारत में भी जनसंख्या बढ़ने के कारण यहां के विद्यार्थियों को प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थाओं में दाखिला नहीं मिल पाता। इसी के चलते देश के कई हिस्सों से विद्यार्थियों में पढ़ाई के लिए विदेश जाने की होड़ सी लग गई, परंतु क्या सभी विद्यार्थियों के हिस्से अच्छे संस्थान और उपयोगी डिग्री ही आती है? क्या देश छोड़ कर जाने वाले विद्यार्थियों के साथ कुछ एजेंट धोखा तो नहीं करते? लिहाजा विदेश में पढ़ाई करने जाने वाले विद्यार्थियों को कई तरह सावधानी बरतने की भी जरूरत है।

विदेशों में उच्च शिक्षा पाने के लिए भारत से छात्र दुनिया के कोने-कोने में जाते हैं। इनमें सबसे ज्यादा लोकप्रिय देश यूके, अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि हैं। आंकड़ों के अनुसार साल 2023 में विदेश में पढ़ाई के लिए जाने वाले भारतीयों की संख्या करीब 13 लाख थी। ऐसा नहीं है कि विदेशों में पढ़ना सस्ता होता है। जो भी छात्र विदेशों में पढ़ाई के लिए गए उन्होंने प्रतिवर्ष औसतन 32 लाख रुपए खर्च किएङ्क परंतु इतना खर्च करने के बावजूद क्या उन्हें वो सब मिला जिसकी खोज में ये अपना घर-भार छोड़ कर गए? क्या विदेशों में पढ़ाई करने वाले सभी भारतीयों के सपने सच होते हैं? ऐसा तो नहीं है कि भारत में अच्छे कॉलेज और यूनिवर्सिटी नहीं हैं। हमारे यहां 1200 विश्वविद्यालय हैं और करीब 50 हजार कॉलेज। इसके बावजूद हमारे यहां के छात्र अगर विदेशों में पढ़ाई करने जा रहे हैं तो उसके पीछे कई कारण हैं। अच्छे कॉलेज में दाखिला पाने की प्रतियोगिता, शिक्षा से आमदनी, अच्छा जीवन स्तर और हैसियत। इन कारणों के चलते यदि किसी छात्र को भारत में मौका नहीं मिलता तो उसके पास विदेश जाने का ही विकल्प बचता है, परंतु विदेशों में शिक्षा पाना इतना आसान नहीं होता। उच्च शिक्षा के लिए वीजा पाना भी अहम बात होती है। विदेश यात्रा और वहां पर रहन-सहन का खर्च भी काफी होता है। इसी कारण वहां पर पढ़ाई के लिए जाने वाले छात्र पार्ट-टाइम नौकरी भी करते हैं। इसी सुहावने सपने का झांसा देकर कुछ चुनिंदा एजेंट भोले-भाले छात्रों को ठगने में कामयाब भी हो जाते हैं। बात कनाडा की करें तो उच्च शिक्षा के लिए यह देश भारतीयों का सबसे पसंदीदा है। इतना ही नहीं कनाडा में पढ़ने जाने वालों में पंजाब के छात्रों की संख्या सबसे अधिक है। एक के बाद एक पंजाब के गांवों से युवकों का कनाडा में पलायन एक सपने की तरह होता है। ये भोले-भाले युवक इन सुहावने सपनों के जाल में बड़ी आसानी से फंस जाते हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि इनके मित्र व रिश्तेदार कनाडा या विदेशों में जाने के कुछ ही महीनों में अपनी ऐसी तस्वीरें भेजते हैं जहां वो महंगी गाड़ियों में घूमते व बड़े-बड़े घरों में दिखाई देते हैं। बस इसे देखते ही हर युवक का मन भी विदेश जाने को उतावला हो जाता है। बस फिर क्या वो सीधे-सादे किसान अपनी जमीन-जायदाद को गिरवी रख एजेंटों के चक्कर में आ जाते हैं। कनाडा जाने वाले कुछ छात्रों को यह भी नहीं पता होता कि उनका दाखिला जिस कॉलेज या यूनिवर्सिटी में हुआ है उसकी मान्यता कैसी है। कनाडा में ऐसे कई कॉलेज हैं, जिनके द्वारा दी गई डिग्री का कोई भी अहमियत नहीं है। कनाडा में ऐसे कई कॉलेज हैं, जो कि किसी शॉपिंग मॉल से चलाए जा रहे हैं। एक कमरे से चलने वाले ऐसे कॉलेजों के द्वारा दाखिला मिलने पर भी वहां की सरकार वीजा दे देती है, जबकि अन्य देशों में ऐसे कॉलेजों को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता। कनाडा में कॉलेज खोलने के लिए सरकार द्वारा लाइसेंस आसानी से मिल जाता है। उसी आधार पर विदेशी छात्रों को वीजा भी मिल जाता है।

आंकड़ों के अनुसार विदेशी छात्र कनाडा की जीडीपी में सालाना 20 अरब कैनेडियन डॉलर का योगदान देते हैं। शायद इसीलिए ऐसे छोटे कॉलेजों के द्वारा नियम कानून न मानने पर कोई सख्त करवाई नहीं की जाती। ऐसा नहीं है कि कनाडा में सभी कॉलेज निम्न स्तर के हैं। विदेशों से जो भी छात्र स्नातक की डिग्री लेकर आते हैं उन्हें उनकी योग्यता के अनुसार अच्छे कॉलेजों में दाखिला मिल जाता है, मगर जो भी छात्र बारहवीं पास करने के बाद यहां आते हैं उनके लिए डिप्लोमा कोर्स लेने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता। इस डिप्लोमा कोर्स की उपयोगिता सिवाय छात्रों से पैसा कमाने के और कुछ भी नहीं होती। ऐसा नहीं है कि कनाडा सरकार को इस गोरखधंधे के बारे में कुछ नहीं पता। यहां की सरकार को जैसे ही पता चला कि ऐसे कई कॉलेज हैं, जो अपनी क्षमता से अधिक विदेशी छात्रों को दाखिला दे रहे हैं उन्होंने एक सूचना भी जारी की जिसमें विदेशी छात्रों को यह हिदायत दी गई कि फीस जमा करने से पहले कॉलेज की ठीक से जांच अवश्य कर लें, परंतु सीधे-सादे छात्रों को ठगने में एजेंट पीछे नहीं रहते। इसलिए यदि आप या आपका कोई जानकार विदेश में पढ़ाई करने के बारे में सोच रहा है तो उसे पूरी छान-बीन के बाद ही ऐसा कदम उठाना चाहिए।

जन्मदिन विशेष : लोहिया का वैश्विक समाजवाद

कुमार कृष्णन

देश की राजनीति में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान और स्वतंत्रता के बाद ऐसे कई नेता हुए जिन्होंने अपने दम पर शासन का रुख बदल दिया उनमें एक थे राममनोहर लोहिया। प्रखर देशभक्ति और समाजवादी विचारों के कारण अपने समर्थकों के साथ–साथ अपने विरोधियों के बीच भी अपार सम्मान हासिल किया। उनमें सन्त की सन्तता, फक्कड़पन, मस्ती, निर्लिप्तता और अपूर्व त्याग की भावना थी। वे समाजवादी इस मायने में थे कि, समाज ही उनका कार्यक्षेत्र था और वे अपने कार्यक्षेत्र को जनमंगल अनुभूतियों से महकाना चाहते थे। उनका सपना था कि, व्यक्ति-व्यक्ति के बीच कोई भेद, कोई दुराव और कोई दीवार न रहे। सब जन समान हों। सब जन सबका मंगल चाहते हों। सबमें वे हों और उनमें सब हों। वे दार्शनिक व्यवहार के पक्ष में नहीं थे। उनकी दृष्टि में जन को यथार्थ और सत्य से परिचित कराया जाना चाहिए। प्रत्येक जन जाने की कौन उनका मित्र है? कौन शत्रु है? जनता को वे जनतंत्र का निर्णायक मानते थे।

23 मार्च 1910 फैजाबाद के अकबरपुर में जन्मे राम मनोहर लोहिया के पिताजी श्री हीरालाल पेशे से अध्यापक व सच्चे राष्ट्रभक्त थे। उनके पिताजी गांधी जी के अनुयायी थे। जब वे गाँधी जी से मिलने जाते तो राम मनोहर को भी अपने साथ ले जाया करते थे। इस कारण गाँधी जी के व्यक्तित्व का उन पर गहरा असर हुआ। लोहिया जी अपने पिताजी के साथ 1918 में अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन में पहली बार शामिल हुए।पांच वर्ष की उम्र में पास ही की टण्डन पाठशाला में उनका नाम लिखा दिया गया। इसके बाद तमसा पार स्थित विश्वेश्वरनाथ हाई स्कूल में लोहिया को पाँचवीं कक्षा में प्रवेश दिलाया गया। वे शरीर से दुर्बल, परन्तु मन से सुदृढ़ थे और बुद्धि से कुशाग्र थे।मारवाड़ी विद्यालय में प्रवेश के बाद वे शहरी परिवेश से अचानक जुड़ गए, क्योंकि बम्बई का मारवाड़ी स्कूल विश्वेश्वरनाथ हाईस्कूल से कई अर्थों में अति आधुनिक था। बम्बई से वे वाराणसी लौटे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में इण्टर का अध्ययन शुरू कर दिया। वहां से सन 1927 ई. में वहाँ से उन्होंने इण्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की। इण्टर पास करने के बाद सन 1927 में लोहिया कलकत्ता आ गए। उन्होंने सेंट जेवियर्स तथा स्काटिश चर्च जैसे ख्यातिनामा महाविद्यालय को छोड़कर विद्यासागर महाविद्यालय में प्रवेश लिया था, जो उस समय भेंड़ों की सराय के नाम से जाना जाता था। लेकिन इस कॉलेज के प्राचार्य राष्ट्रीय विचारधारा से सम्बद्ध थे और लोहिया राष्ट्रीय विचारधारा के पूर्णतः समर्थक थे। लोहिया का अंग्रेजी भाषा पर खासा अधिकार था। उनके मन में स्वतंत्र देश का स्वाभिमान जाग उठा था। वे शिक्षा प्राप्त करने की अपेक्षा सम्मान के प्रति ज्यादा सजग हो उठे थे। इस कारण अपने देश को आजाद कराने की बात गहरे पैठती गई थी। वे देश की आजादी के प्रतिबद्ध हो चुके थे। इन्हीं कारणों से लोहिया बर्लिन के लिए रवाना हो गए। वहां उन्होंने बर्लिन के हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लिया। विश्वविख्यात अर्थशास्त्री प्रोफेसर बर्नर जोम्बार्ट उसी विश्वविद्यालय में थे। लोहिया ने उन्हें ही अपना निर्देशक तथा परीक्षक चुना।बर्लिन में प्रोफेसर जोम्बार्ट के मातृभाषा प्रेम से वे काफी प्रभावित हुए और यहीं से उनमें मातृभाषा प्रेम जोर पकड़ गया था और वे आजीवन मातृभाषा के हिमायती रहे।

वहां रहकर उन्होंने तीन माह में रात-दिन जुटकर जर्मन भाषा में खासी सफलता प्राप्त कर ली। इसके साथ ही यह सुदृढ़ निश्चय भी हो गया कि ज्ञान तथा अभिव्यक्ति के लिए किसी खास भाषा का ज्ञान होना जरूरी नहीं होता। मातृभाषा को छोड़कर ज्ञान व अभिव्यक्ति का दूसरा सशक्त माध्यम कोई नहीं हो सकता। मातृभाषा और हिन्दी के प्रति उनमें अटूट श्रद्धा व विश्वास होने का यही कारण था। वे कलकत्ता में, अध्ययन करते हुए भी हिन्दी में बातचीत करना अधिक पसन्द करते थे। चार साल के बाद लोहिया जी जर्मनी से डॉक्टरेट की उपाधि हासिल कर अपनी मातृभूमि पर लौटे।उनका विषय था अर्थशास्त्र। वे कलम के धनी थे। प्रतिभा की धार और विद्धत्ता ही उनकी पूँजी थी। वे सीधे मद्रास से प्रकाशित होने वाली अंग्रेजी पत्र हिन्दू के कार्यालय पहुंचे। उन्हें सम्पादक तो नहीं मिले, लेकिन सह-सम्पादक मिले। लोहिया जी ने अपना परिचय दिया और लेख लिखकर देने का कारण बताया। उन्होंने वहां बैठकर लेख लिख डाला और उसके लिए पारिश्रमिक स्वरूप पच्चीस रुपये प्राप्त किए।वे अपने पिता से मिलने कोलकाता आए, अपने चाचा रामकुमार के घर गए। लोहिया को अपने चाचा से मालूम पड़ा कि, उनके पिता कारोबार बन्द कर सारा समय कांग्रेस को देने लगे हैं। लम्बी जेलयात्रा भी कर आए हैं। आजकल बड़ा बाजार को उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र बना रखा है। चरखा समिति बना डाली है। वे हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय में भी बैठते हैं। हिन्दू-मुसलमान के भेदभाव को दूर करने के लिए कौमी बाल्टी रख छोड़ी है। उनकी दृष्टि में वह बाल्टी हिन्दू-मुसलमान एकता का प्रतीक है, क्योंकि दोनों ही उससे पानी लेकर पीते थे। लोहिया ने पाया कि कलकत्ता पहले से भी अधिक गरीब हो गया है। बेकारी बढ़ी है। सब कुछ अन-बदला सा पथराकर ठहर गया है। उनकी चिन्तन-धारा कभी देश-काल की सीमा की बन्दी नहीं रही। उन्होंने सदा ही विश्व-नागरिकता का सपना देखा था। वे मानव-मात्र को किसी देश का नहीं बल्कि विश्व का नागरिक मानते थे। उनकी चाह थी कि एक से दूसरे देश में आने जाने के लिए किसी तरह की भी कानूनी रुकावट न हो और सम्पूर्ण पृथ्वी के किसी भी अंश को अपना मानकर कोई भी कहीं आ-जा सकने के लिए पूरी तरह आजाद हो। लोहिया एक नयी सभ्यता और संस्कृति के द्रष्टा और निमार्ता थे। अपनी प्रखरता, ओजस्विता, मौलिकता, विस्तार और व्यापक गुणों के कारण वे अधिकांश में लोगों की पकड़ से बाहर रहे। इसका एक कारण है-जो लोग लोहिया के विचारों को ऊपरी सतही ढंग से ग्रहण करना चाहते हैं, उनके लिए लोहिया बहुत भारी पड़ते हैं। गहरी दृष्टि से ही लोहिया के विचारों, कथनों और कर्मों के भीतर के उस सूत्र को पकड़ा जा सकता है, जो सूत्र लोहिया-विचार की विशेषता है, वही सूत्र ही तो उनकी विचार-पद्धति है। लोहिया की दृष्टि में मार्क्स पश्चिम के तथा गांधी पूर्व के प्रतीक हैं और लोहिया पश्चिम-पूर्व की खाई पाटना चाहते थे। मानवता के दृष्टिकोण से वे पूर्व-पश्चिम, काले-गोरे, अमीर-गरीब, छोटे-बड़े राष्ट्र नर-नारी के बीच की दूरी मिटाना चाहते थे।